कश्मीरी और अमरनाथ

हिमांशु कुमार

आज ट्रेन में यात्रियों से चर्चा हुई
ये यात्री अमरनाथ यात्रा से लौट रहे थे
मैनें पूछा कैसी रही आपकी यात्रा ?
बोले अरे वो सब कश्मीरी आतंकवादियों की वजह से गड़बड़ हो गई
मैने पूछा अच्छा क्या कश्मीरी आतंकवादियों नें अमरनाथ पर हमला किया
यात्री बोले नहीं अमरनाथ पर हमला तो नहीं किया
मैनें पूछा तो क्या कश्मीरी आतंकवादियों ने तीर्थयात्रियों पर हमला किया
वे एक दूसरे का मूँह देखने लगे , फिर धीरे से बोले कि नहीं कश्मीरी आतंकवादियों नें तीर्थयात्रियों पर कोई हमला नहीं किया
मैनें पूछा कि फिर कश्मीरी आंतकवादियों की वजह से आपकी यात्रा कैसे बर्बाद हो गई ?
तीर्थ यात्री बोले कि आर्मी वालों नें ऐसा बोला था
यानी अमरनाथ यात्रा किसी कश्मीरी के कारण नहीं रूकी है
सेना और सरकार ने मिल कर कश्मीरियों को बदनाम करने के लिये बेवजह अमरनाथ यात्रा बन्द करी है
दूसरी खबर यह है कि अमरनाथ यात्रा बन्द करके यात्रियों को जबरदस्ती वापिस भेजा जा रहा है
कल वापिस आते समय तीर्थयात्रियों की एक बस पलट गई
तीर्थयात्री दूसरी गाड़ियों से मदद मांगते रहे
लेकिन दूसरे तीर्थयात्रियों ने मदद के लिये अपनी गाड़ी नहीं रोकी
सेना का ट्रक भी नहीं रुका
फिर किसी मुस्लिम कश्मीरी गांव वाले ने यह सब देखा
फिर तो कश्मीरी मुसलमानों का पूरा गांव
हिन्दु अमरनाथ यात्रियों को बचाने के लिये दौड़ पड़ा
बस के काँच तोड़ कर बस में फंसे यात्रियों को निकाला गया
फिर सभी घायल तीर्थ यात्रियों को कश्मीरी गांव वालों ने अस्पताल पहुंचाया
दूसरी खबर यह है कि दंगे में फंस कर एक पंडित परिवार भूखा था
एक कश्मीरी पति पत्नी ने कफ़्यू की परवाह करे बिना अपने कन्धे पर खाने का सामान लादा
और कई मील पैदल चल कर पंडित परिवार तक खाना पहुँचाई
सुना है कश्मीर में गोलियों के छर्रे लगने से एक सौ के करीब कश्मीरियों की आंख खराब हो गई है
इधर भारत वासियों की आंखें बिना गोली लगे ही बन्द हो गई हैं
हमें सच्चाई दिखनी ही बन्द हो गई है
या हम जान बूझ कर यह सब देखना नहीं चाहते ?

(हिमांशु कुमार सामाजिक कार्यकर्ता हैं और हिमाचल प्रदेश में रहते हैं)

सूप तो बोले सो बोले छलनी बोली जिसमें 72 छेद .....

पेज एक का शेष

जब आप कहते हैं कि रेल्वे वाले साफ चादर तक नही दे पाते तब आप स्वयं अपनी चहेती निजी पूंजी की सरमाएदारों वाली ठेकेदारी व्यवस्था के ऊपर सवाल खड़ा कर देते हैं क्योंकि चादरों की धुलाई से लेकर यात्रियों को उनका वितरण तक का जिम्मा ठेकेदारों के पास है। चादर बाँटने वाले कर्मचारी से ही कभी पूंछ लिया होता कि उसका ठेकेदार उसको कितनी पगार देता है तो पता चल जाता कि खामी कहाँ है और आप ढूंढ़ कहाँ रहे हैं ? आदरणीय न्यायमूर्ति सर !इस अमानवीय पूंजीवादी और ठेकेदारी व्यवस्था ने केवल रेलवे की चादरें गंदी करने भर का काम नही किया है बल्कि और भी बहुत कुछ खत्म किया है। वर्धा के पहले बापू के सेवाग्राम स्टेशन पर वेंडरों की एक कोआपरेटिव सोसायटी वहाँ की कैंटीन चलाती थी। जब तक कैंटीन इस सोसायटी के पास थी,वहाँ के वड़े अपने स्वाद की अखिल भारतीय पहचान रखते थे। किसी एक दिन रेलवे बोर्ड ने कैंटीन अपने किसी चहेते दिल्ली के ठेकेदार को दे दी। सैकड़ों परिवारों की रोजी रोटी छिन गई। कोर्ट कचहरी ने कोई राहत नही दी। और वड़ों के स्वाद तो गायब ही हो गए। जज़ साहब,इसकी मार बड़ी गहरी और घातक है।

ड्यूटी के दौरान हर साल हजार दो हजार की संख्या में कट जाने वाले रेल कर्मी ट्रैकमैन लोग हैं । 2004 के बाद उनके लिए पेंशन नही है। सब कुछ कहते इस पर ? मैं भारतीय रेल्वे का लोको पायलट। मुझे छुट्टियां नही मिलतीं। काम का दबाव मुझे चैन की सांस नही लेने देता। रेल्वे में लोको पायलटों की कुल पैंसठ हजार सेंक्शन पोस्ट है पर पचास हजार हम हैं और पंद्रह हजार पद खाली।

हमें आपके द्वारा या किसी अन्य के द्वारा प्रमाणपत्र की आवश्यकता नही है। क्योंकि हम नही बोलते,हमारा काम बोलता है।

-मिथिलेश कुमार त्रिपाठी,नागपुर

डीआईजी भारती अरोड़ा अब गाय भी चरायेंगी

पेज एक का शेष

पकड़े जाने पर कोई इन्हें छुड़ाने पर धेला खर्च करने को तैयार नहीं। हां इनकी कीमत पशु-तस्करों एवं मांस व्यापारियों की नज़रों में जरूर है। इसी के चलते लोग चोरी छिपे इन्हें बेचते भी हैं और तस्कर जबरन इन्हें उठाते भी हैं। इसके लिये वे पुलिस व अन्य लोगों से लड़ते-मरते भी हैं।

रही बात डीआईजी भारती अरोड़ा एवं उनकी पलटन की तो यह एक विशुद्ध राजनैतिक नौटंकी है। पुलिसिंग करने के लिये तो पुलिस है नहीं, गाय चराने को पुलिस लगा रहे हैं। भारती अरोड़ा जैसी काबिल पुलिस अफ़सर को पहले बच्चे पढ़ाने के लिये राई के खेल स्कूल में लगाया तो अब गायों की सेवा में लगा दिया। संघी प्रचारकों की सरकार से और अपेक्षा भी क्या हो सकती है।

जिस घटना ने एक डॉक्टर की जिंदगी बदल दी

पास आउट होने के बाद मैंने भी सपने देखे थे कि एक सुंदर सी भव्य क्लीनिक होगी एक रिसेप्शनिस्ट और एक नर्स होगी जो मेरे मरीजो को बारी बारी से चेंबर में भेजेगी व मरीजो को इंजेक्शन लगाएगी। SBI में एकाउंट होगा जिसकी पासबुक में छह अंको की संख्या हमेशा अंकित रहेगी।पर यथार्थ इतना खुरदुरा होगा यह सपने में भी ना सोचा था।

इंटर्नशिप के बाद क्लीनिक खोल ली थी। एक दिन की ओ पी डी 100 पेशेंट्स से कम की ना थी। मैं भी खुश था कि सपने पूरे होने में ज्यादा समय नहीं लगने बाला है।उस दिन भरी तपती जेठ की दोपहरी थी। दूर गांव से एक विधवा वृद्धा अपनी अठारह बीस साल की बेटी को ले कर आई जिसे फूड पाइजनिंग थी।गांव से दवा भी ली थी पर उल्टी दस्त बंद नहीं हुए। मैंने देख कर कहा इसको ड्रिप लगेगी तब सही होगी।जैसा कि हर गरीब मरीज पूछता है उसने भी पूछा डाक्साब कितना खर्चा हो जाएगा? मैंने कुछ सोच कर बताया तीन सेलाइन बाटल तो लगेंगी तो ? छह सौ का बिल बनेगा ही। यह बात आज से तीस साल पहले की है जब मैं स्कूटर में एक लीटर पेट्रोल पांच रुपए में डलवाता था। वह बोली ठीक है आप इलाज शुरु कीजिए मैं रुपए ले कर आती हूं।इतना कह कर वह चली गई मैंने भी उस लड़की को ड्रिप लगा दी।उसको गए आधा घंटा हुआ एक घंटा हुआ फिर डेढ घंटा हो गया पर वह लौट कर नहीं आई।मैं भी परेशान हो गया उस लड़की को बार बार ड्रिप निकाल टायलेट ले जाते हुए।दो बाटल लग चुकी थी तीसरी लगाने जा रहा था कि उस वृद्धा को कुछ बर्तन लिए रिक्शे पर बाजार की ओर जाते देखा।मन में बहुत कोफ्त हुई कि बीमार लड़की को छोड़ यह कहां मटरगश्ती कर रही है।

अब उस लड़की में भी सुधार था काफी देर से टायलेट नहीं गई थी ।तीसरी ड्रिप भी खत्म होने बाली थी तभी वह वृद्धा क्लीनिक के अंदर आई अपनी बेटी के सर पर हाथ फेरा और हाल पूछा।संतुष्ट हो कर मेरे पास आई और सौ सौ के छह नोट मेरे हाथ पर रख दिए।मैं तो भरा बैठा था बरस पड़ा उसपर

ऐसे कोई मरीज को अकेला छोड़ कर जाता है?

मुझे और भी मरीजो को अटेंड करना होता है उसे बार बार टायलेट ले जाना पड़ा और तुम रिक्शे में घूमने चल दीं।

छह सौ रुपए में तुमने मुझे खरीद तो नहीं लिया जो तुम्हारे मरीज को उठाऊं बैठाऊं भी मैं।

वह रुआंसी हो कर बोली मैं तो पैसे लेने गई थी।

इतना टाइम लगता है पैसे लाने में?

घर में तो पैसे थे नहीं उधार भी गांव भर में किसी से नहीं मिले तो उसकी शादी के लिए कुछ बर्तन खरीद रखे थे उनको बेच कर आपकी फीस चुकाई है।

अब स्तब्ध,निशब्द,किंकर्तव्यविमूढ़ जो भी कह लीजिए होने की बारी मेरी थी।

कुछ ही पल में मैंने निर्णय ले लिया।उसको स्कूटर पर बैठाया और उस बर्तन की दुकान पर पहुंच गया।पैसे दे कर उसको वर्तन वापस दिलवाए।

अब मुझे समझ आ गया था कि मेरे सपने दूसरों की कराहों पर बुने गए हैं।

बस तब से ना रिसेप्शन बन पाया ना रिसेप्शनिस्ट अपाइंट हुई ना नर्स और ना ही चैंबर बन सका भव्य।क्योंकि अब वह क्लीनिक ना बन एक दरबार बन चुका था फकीर का जहां अब पैसों से इलाज नहीं होता है।

कबिरा खड़ा बाजार में
लिए लकुटिया हाथ,
जो घर फूके आपना
चले हमारे साथ।

- आलोक भारती

अद्भुत भारतीय मीडिया !

हरियाणा राज्यसभा चुनाव में कलम और स्याही बदलने पर मीडिया की खामोशी ।

रामदेव को हरियाणा और असम में विशाल भूखंड देने पर कोई चर्चा नहीं।

नागालैंड को अलग झंडा और पासपोर्ट देने पर चुप्पी (समझौते के बहुत दिनों बाद केवल इधर-उधर से यह समाचार सामने आ रहा है, वर्ना इस समझौते को मीडिया द्वारा मोदी सरकार की बड़ी कामयाबी बताया जा रहा था।)

लातूर और बुन्देलखण्ड की भूख प्यास भी चर्चा से बाहर। जो समाचार इन दिनों छाया रहा वह था एन एस जी के लिए मोदी सरकार का अश्वमेध यज्ञ। मुझे तो कोई नहीं मिला जो बता पाता कि इससे देश को क्या फायदा होता। गरीबी, भुखमरी, महगाई, किसानों की आत्महत्या, साम्प्रदायिकता इत्यादि के निवारण में इसकी क्या भूमिका है।

लेकिन इस अतिरंजित अभियान का वही हश्र हुआ जो पहले से निश्चित था। कामयाबी मिलती तो वाह - वाह मोदी नहीं मिली तो चीन, ब्राजील, न्यूजीलैंड, आयरलैंड, तुर्की की शरारत। एक कहानी है। एक बार एक इलाके के कुत्ते भूख, प्यास, अन्याय इत्यादि से पीड़ित थे। उनके मुखिया पर जब समस्याओं का दबाव बहुत बढ़ गया तो उसने इन समस्याओं के समाधान के लिए गया जा कर श्राद्ध करने का एलान कर दिया। चाटुकार वाह - वाह करने लगे। ढोल नगाड़े बजने लगे। मुखिया को फूल मालाओं से लाद दिया गया। मुखिया जी श्राद्ध करने के लिए रवाना हो गए।

इलाके से बाहर निकलते ही दूसरे इलाके के कुत्ते उन पर टूट पड़े। किसी तरह जान बचा कर हांफते हुए मुखिया जी लौट आए।

उन्होंने बताया कि जब पडोसी ही नहीं चाहते कि अच्छा काम किया जाय तो क्या किया जा सकता है।

-श्याम अम्बुज सिंह

घर बैठे प्राप्त करें मज़दूर मोर्चा

आज ही अपने हॉकर से कहें कोई दिक्कत हो तो शर्मा न्यूज एजेंसी से फोन नं 9811159238 पर बात करें। बल्लभगढ के पाठक अरोडा न्यूज एजेंसी से 9811477204 पर बात करें:

अन्य बिक्री केन्द्र :

1. **आनंद मैगजीन सैंटर केसी रोड, एनएच-5,**
2. **प्रिंट फोर्ट टेलीफोन एक्सचेंज के सामने नेहरू ग्राउंड,**
3. **रेलवे बुक स्टाल ओल्ड रेलवे स्टेशन,**
4. **रैंक, 45 नीलम चौक,**
5. **एनआईटी रेलवे स्टेशन के बाहर बाटा चौक पुल के नीचे,**
6. **राम खिलावन बल्लभगढ़ बस अड्डा पुलिस चौकी के सामने,**
7. **हितेश ग्रोवर सैक्टर 29 पेट्रोल पम्प के पास ।**
8. **जितेन्द्र, बाटा सैंटर - 9971064207**
9. **स्थानीय अदालतों में : चैम्बर नं. 56-एस.के .जोशी - वकील साहब**